ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 11 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2019

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

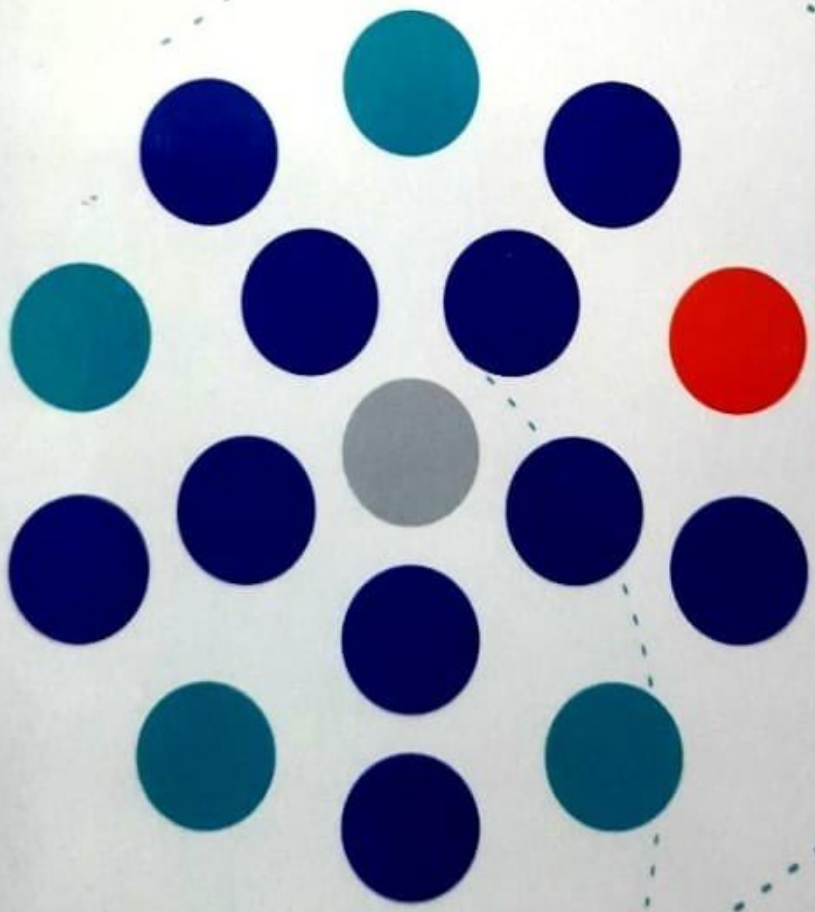

India's Leading Referred Hindi Language Journal

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

भक्ति काव्य : बाबा नागार्जुन–डॉ० सीमा कुमारी झा
विश्व के दो महान साहित्कारों – प्रेमचंद एवं गोर्की के साहित्य में नारी शोषण का तुलनात्मक अध्ययन–अंकिता कुमारी
रश्मिरथी के कर्ण के शौर्य और सौम्य स्वभाव का संक्षिप्त अनुशीलन–रितु प्रिया
डायस्पोरा अध्ययन के राजनीतिक आर्थिक परिप्रेक्ष्य–मुन्नालाल गुप्ता
नारी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० शोभा कुमारी
भरतपुर जिले में जल जनित रोगों का चिकित्सा भौगोलिक अध्ययन–देवेन्द्र कुमार शर्मा; डॉ० विजय कुमार वर्मा
विवेकी राय के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थबोध–माधुरी राजनाथ सिंह
महादेवी की वेदना की प्रतिष्ठा–डॉ० गायत्री सिंह
जयशंकर प्रसाद एक बहुआयामी व्यक्तित्व–शशि कुमार पासवान
शिवपूजन सहाय के कथेतर गद्य साहित्य का अभिव्यक्ति सौन्दर्य–सुरजीत बिहारी
मीडिया नेटवर्किंग एवं डिजीटल वातावरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिला के संदर्भ में)–डॉ० रणवीर कुमार
महात्मा गाँधी की प्रथम बिहार यात्रा तथा चम्पारण में सत्याग्रह के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० दीपक कुमार रजक
भारत में राष्ट्रवाद की चेतना और प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना–डॉ० मुकुल कुमार शर्मा
नूर मोहम्मद के काव्य की सांस्कृतिक भावभूमि–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह
वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० सुशील कुमार तिवारी
गाँधीवादी पर्यावरण संरक्षण के एकादश व्रत–सुनीता कुमारी
साहित्य अथवा काव्य में सौंदर्यशास्त्र की भूमिका–डॉ० रतन प्रकाश मिश्रा
ओमप्रकाश बाल्मीकि की कविताएँ–जयकान्त यादव
जैनेन्द्र की नारी दृष्टि–प्रियांशु कुमारी
ब्रिटिश भारत में अकाल नीति का विकास : तथ्यात्मक विश्लेषण–डॉ० अनिल कुमार सिन्हा
रघुवीर सहाय के काव्यों में देश-नीति बनाम विदेश-नीति–नीरज कुमार सिन्हा
कुषाण-पूर्व अवधि में बौद्ध धर्म का विस्तार–डॉ० प्रफुल्ल कुमार
मुन्नी मोबाईल और स्त्री अस्मिता–विभा कुमारी
निराला के काव्य में पूँजीवाद एवं समाजवाद–बबीता कुमारी
यात्री-नागार्जुन के मैथिली उपन्यासों में चित्रित स्त्री-चेतना के विविध आयाम–डॉ० ऋचा कुमारी
गोदान : पढ़ने और परखने के क्रम में...–चन्दीर पासवान
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में सामाजिक आदर्श–डॉ० उमेश कुमार शर्मा
जयपुर के पर्यटन की समस्या एवं समाधान: एक भौगोलिक अध्ययन–शोभा शर्मा
राजकमल व्यक्तित्वक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० रौशन कुमार यादव
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस का भूमंडलीकरण एवं बाजारीकरण पर प्रभाव–चन्दना शर्मा
शिक्षा का अधिकार कानून के प्रमुख प्रावधान और चुनौतियाँ–कार्तिकेय कुमार
हिन्दी साहित्य में ग्राम्य-जीवन–डॉ० संजीव रंजन 'अमरेश'
आग और राग के कवि नेपाली–डॉ० दिवाकर चौधारी
बिहार के कैमूर जिले में महिला साक्षरता में परिवर्तन (1981-2011) एक भौगोलिक अध्ययन–रीता कुमारी

मीडिया नेटवर्किंग एवं डिजीटल वातावरण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिला के संदर्भ में)

डॉ० रणवीर कुमार

एम.ए., पीएच.डी., पीडीएफ (यूजीसी), स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग,
बी. आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

आज देश में इन्टरनेट की पहुँच इस तेजी के साथ बढ़ रही है कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इंटरनेट आधारित सेवाओं का बोलवाला देखने को मिल रहा है। इन्टरनेट आधारित सेवाओं का दायरा इतना व्यापक है कि हमारे दैनिक जीवन को विभिन्न प्रकार से यह प्रभावित कर रही है। लोग इंटरनेट पर जानकारी खोजते हैं, मनोरंजन की तलाष करते हैं, उत्पाद खरीदते हैं, आर्थिक लाभ उठाते हैं, कारोबार करते हैं और सरकारी तथा निजी क्षेत्र द्वारा प्रदान की जाने वाली ऑनलाईन सेवा का उपयोग भी करते हैं। साथ ही सोशल मीडिया नेटवर्किंग वेबसाईटों जैसे - फेसबुक, ट्विटर, लिंकर, यू-ट्यूब, माइस्पेश, से एक दूसरे को जोड़े रखने में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। आज हमारे दैनिक जीवन में मीडिया नेटवर्किंग प्रधान भूमिका निभा रही है। कम्प्युटर, मोबाईल, इन्टरनेट अब केवल उत्पादकता के कार्यों या दफ्तरी कार्यों तक ही सीमित नहीं रह गयी है बल्कि ऐसा लगता है कि जिस तरह से भाषा और सामान्य बोध किसी भी क्षेत्र की एक बुनियादी जरूरत है उसी तरह से कम्प्युटर, मोबाईल, इंटरनेट तथा उनसे जुड़े उत्पादों व सेवाओं की जानकारी हर व्यक्ति के लिए जरूरी बन गई है। इनका प्रचार-प्रसार और इनके उपर निर्भरता इतनी बढ़ गयी है कि आज हम इसे डिजीटल वातावरण का रूप कह सकते हैं। आज के परिस्थितियों में डिजीटल माध्यमों का ज्ञान सिर्फ व्यक्ति के लिए निजी स्तर पर ही आवष्यक नहीं रह गया है बल्कि वह सरकारी योजनाओं तथा लक्ष्यों में भी शामिल है। आज दुनिया में डिजीटल वातावरण के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि दुनिया की कुल 7.6 अरब की आबादी में लगभग 3.4 अरब सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं वहीं लगभग 67 फीसदी आबादी इंटरनेट कनेक्टीविटी के दायरे में हैं वहीं भारत में कुल 1.3 अरब की आबादी में लगभग 41 फीसदी आबादी इंटरनेट कनेक्टीविटी के दायरे में हैं तथा कुल लगभग 31 करोड़ सोशल मीडिया के उपयोगकर्ता हैं। आज हमारे देश में डिजीटल वातावरण तैयार हो रहा है और जिस कारण अब डिजीटल इंडिया की बात की जा रही है।

आजकल कम्प्युटर, मोबाईल और इंटरनेट जैसी अवधारणाएँ जो किसी समय हमारे लिए भविष्योन्मुखी प्रतीत होती थी, आज हमारे दैनिक जीवन में प्रधान भूमिका निभा रही है। वे महज उत्पादकता के कार्यों या दफ्तरी कार्यों तक सीमित नहीं रह गई है बल्कि ऐसा लगता है कि जिस तरह से भाषा और कॉमन सेंस (सामान्य बोध/ज्ञान) किसी भी क्षेत्र में एक बुनियादी जरूरत है उसी तरह से कम्प्युटर, मोबाईल, इन्टरनेट तथा उनसे जुड़े उत्पादों व सेवाओं की कामचलाऊ जानकारी हर व्यक्ति के लिए जरूरी बन गई है। इन परिस्थितियों में, डिजिटल माध्यमों का ज्ञान सिर्फ व्यक्ति के लिए निजी स्तर पर ही आवष्यक नहीं रह गया है बल्कि यह सरकारी योजनाओं तथा लक्ष्यों में भी शामिल है।

वर्तमान में इन्टरनेट आधारित नेटवर्किंग सम्पूर्ण जीवन शैली को बदल दिया है। लोग घर बैठकर ऑनलाईन माध्यम से भोजन की व्यवस्था कर रहे हैं ऐसे बहुत सारे एप हैं जो मनपसंद भोजन की डिलीवरी ऑनलाईन ऑडर के आधार पर कर रहे हैं। आज यह इस तरह हमारे जीवन शैली में समा चुका है कि हम एक साथ कई कार्य कर ले रहे हैं। ऑनलाईन मार्केटिंग कोई भी वस्त्र परिधान/मोबाईल एसोसिरिज/कोई भी खाद्य सामग्री/रेलवे टिकट बुकिंग/परीक्षा फार्म भरने इत्यादि का उपयोग कम समयों में हो रहा है।

इन्टरनेट माध्यमों ने सोषल मीडिया को जन्म दिया है। सामाजिक जागरूकता लाने में सोशल मीडिया का योगदान अतुलनीय है। वर्तमान में सोशल मीडिया ने पूरे विश्व को जोड़ रखा है। सोशल मीडिया का माध्यम जैसे - फेसबुक, यू-ट्यूब और टिवट्र आदि के बढ़ते प्रभाव से इसकी ताकत और बढ़ गई है। क्योंकि वेबसाइट पर बिताए जाने वाले कुछ समय का एक चौथाई हिस्सा सोशल नेटवर्किंग साइट पर खर्च किया जाता है, जिससे हर न्यूज मीडिया व वेबसाइट जुड़ी है और इस तरह का ऑनलाइन दुनिया के लोगों की खबरों की तलब को पूरा करने का काम कर रहा है। चूँकि कम्प्यूटर मोबाइल के प्रति जागरूकता में भी बढ़ोतरी हो रही है। और यह पूरी बढ़त अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से वेब मीडिया के विस्तार और उच्चतर भविष्य का संकेत है।

आजकल मुद्रित माध्यमों में हम एक ठहराव की दिशा में बढ़ रहे हैं, इसलिए ऑनलाईन माध्यमों के प्रयोग तथा उनसे मिली जानकारी को समझने की क्षमता महत्वपूर्ण हो जाती है। जिन लोगों और छात्रों मे डिजिटल साक्षरता की कमी है, वे अपने उपयोग की जानकारी को त्वरित तथा सटीक ढंग से ऑनलाईन माध्यमों से नहीं कर सकते हैं। इतना ही नहीं, वे ऐसे बहुत सारे अवसरों को भी खो देंगे जो आज इंटरनेट और मोबाईल के जरिए बड़ी संख्या में पैदा हो रहे हैं। इनमें रोजगार के अवसर भी हैं, कारोबार के मौके भी तथा शिक्षा के जरिए भी। इतना ही नहीं आज एक जागरूक नागरिक बनने के लिए भी इसकी

उपयोगिता आवश्यक है। खासकर ऐसे दौर में जब मतदाता परिचय पत्र से लेकर आधार कार्ड और ड्राईविंग लाइसेंस से लेकर डिग्रियों को सुरक्षित रखने के लिए डिजिटल वॉलेट के प्रयोग तक में डिजिटल माध्यमों का इस्तेमाल हो रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

डिजीटल वातावरण के विकास ने मानव के जीवन के सभी पक्षों यथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामुदायिक तथा धार्मिक आदि को प्रभावित किया है अर्थात् प्रत्येक क्षेत्र में मानव को डिजीटल बनाने का प्रयास अधिक से अधिक मात्रा में किया है। इलेक्ट्रॉनिक शिक्षा (ई-शिक्षा), इलेक्ट्रॉनिक व्यापार (ई-व्यापार), इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य (ई-वाणिज्य), इलेक्ट्रॉनिक मेडिसीन (ई-मेडिसीन) आदि विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। कुछ राष्ट्र अभी भी इन प्रौद्योगिकीय विकास से अपने को दूर रखे हुए है। समाज में यह विकास एक डिजिटल रेखा खींचते जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह देखा जा रहा है कि डिजीटल वातावरण आधारित समाज किस प्रकार की है अर्थात् इसने किस प्रकार समाज को प्रभावित किया है।

समग्र एवं निदर्शन

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उत्तर बिहार के मुजफ्फरपुर जिला को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया है तथा अध्ययन क्षेत्र से 100 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है तथा अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए मुजफ्फरपुर जिला के ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों का चयन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र से चयन किये गये उत्तरदाताओं का परिचय इस प्रकार है–

तालिका संख्या - 01: उत्तरदाताओं का परिचय

शिक्षाउ	त्तरदाता	प्रतिशत
नन मैट्रिक	10	10
मैट्रिक	20	20
इंटर	25	25
स्नातक	25	25
स्नातकोत्तर एवं अन्य	20	20
कुल	**100**	**100**

अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है–

तालिका संख्या 02: क्या आपको लगता है कि वर्तमान समय में डिजीटल वातावरण की स्थिति देखने को मिल रहा है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
100	100	94	94	06	06

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि वर्तमान समय में डिजीटल वातावरण की स्थिति देखने को मिल रहा है तो कुल उत्तरदाताओं के 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया हैं जबकि कुल उत्तरदाताओं के 06 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या 03: क्या आपको लगता है कि रेस्टोरेंट अथवा अन्य स्थानों से खाद्य पदार्थों की डिलीवरी का प्रचलन बढ़ता जा रहा है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
100	100	82	82	18	18

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि रेस्टोरेंट अथवा अन्य स्थानों से खाद्य पदार्थों की डिलीवरी का प्रचलन बढ़ता जा रहा है तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 82 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्या 04: क्या आप ऐसा मानते हैं कि इन्टरनेट माध्यमों का विकास ने ही डिजीटल वातावरण तैयार किया है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	हाँ		नहीं		
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
100	100	90	90	10	10

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आप ऐसा मानते हैं कि इन्टरनेट माध्यमों का विकास ने ही डिजीटल वातावरण तैयार किया है तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 90 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्या 5: क्या आपको ऐसा लगता हैं कि ऑनलाईन मार्केटिंग ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ रही है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	हाँ		नहीं		
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत .	नही	प्रतिशत
100	100	80	80	20	20

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता है कि ऑनलाईन मार्केटिंग ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ रही है तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 100 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या 06: क्या आपको लगता है कि वर्तमान में ऑनलाईन एजुकेशन को बढ़ावा देने में मीडिया नेटवर्किंग का पूरा योगदान है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	हाँ		नहीं		
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
100	100	30	60	20	40

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको अटल नवाचार मिशन के बारे में जानकारी है तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 60 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या 07: क्या आपको लगता है कि डिजीटल वातावरण ने सामाजिक परिवर्तन लाया है? हाँ/नहीं

उत्तरदाता	हाँ		नहीं		
कुल सं.	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
100	100	100	100	00	00

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि डिजीटल वातावरण ने सामाजिक परिवर्तन लाया है तो सभी उत्तरदाताओं के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

निष्कर्ष

अत: स्पष्ट है कि इंटरनेट ने दुनिया बदल दी है। मीडिया जगत भी इसके अछूता नहीं रहा। प्रौद्योगिकी ने पूरे मीडिया का चेहरा ही बदल कर रख दिया है। ऑनलाइन पत्रकारिता के इस युग में सूचनाएँ पंख लगाकर उड़ रही है। मीडिया के परंपरागत तौर-तरीकों के बरक्स इंटरनेट कम्प्यूटर लैपटाप चिप, मेमोरी-कार्ड, डाटा-कार्ड, मदरबोर्ड और कार्ड-रीडर ने पत्रकारिता एवं सूचना के क्षेत्र में एक नयी दुनिया रच डाली है, जिसने सचमुच सूचना क्रांति को सार्थकता प्रदान की है। मीडिया के इस बदले हुए स्वरूप ने पत्रकारिता को आसान बनाकर इसकी पहुंच को भी बढ़ाया है। ऑनलाइन अखबारों की शुरूआत हो चुकी है। बस क्लिक करने की जरूरत है और खो जाइये सूचनाओं और खबरों के संसार में खासियत यह है कि आज के अखबारों के साथ आप दस दिन पुराना अखबार भी ऑनलाइन पढ़ सकते है।

यकीनन ऑनलाइन पत्रकारिता ने मीडिया को नूतन संस्पर्श के साथ नये आयाम भी दिए हैं। जहां ट्विटर और फेसबुक जैसी सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स ने अभिव्यक्ति और वैचारिक आदान-प्रदान को गति प्रदान की है, वहीं ब्लॉग के माध्यम से संवाद बढ़े हैं। भारत में इस समय 6 करोड़ से भी ज्यादा लोग फेसबुक का इस्तेमाल कर रहे हैं। ट्विटर का इस्तेमाल भी लगभग एक करोड़ भारतीय कर रहे हैं। यह संख्या मामूली नहीं कहीं जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. एच. जी. बारनेट, "इनोवेशन : द बेसिस ऑफ कल्चरल एक्सचेंज", मैकग्रा हिल 1953.
2. एस. सी. दुबे, पर्सनलाईज़ेशन एण्ड डेवलपमेण्ट, विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988
3. कुप्पुस्वामी, बी., कम्युनिकेशन एण्ड सोशल डिवलेपमेंट इन इण्डिया, दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि., 1976
4. गवर्नर जी., क्वोटेड बाई बी. के. राय बर्मन, मास कम्युनिकेशन इन चैंजिग वर्ल्ड, इन मेनस्ट्रीम वॉल्यूम, नवम्बर 17, दिसम्बर 26, 1985.
5. जोशी, पी. सी., कम्युनिकेशन एण्ड नेशन बिल्डिंग - 1, तथा कम्युनिकेशन एण्ड नेशन बिल्डिंग - 2 इन मेनस्ट्रीम वॉल्यूम नवम्बर 13-14.
6. सिंह, जे. पी.; सामाजिक परिवर्तन : स्वरूप एवं सिद्धान्त, प्रैंटिस - हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2000.
7. योजना एवं कुरुक्षेत्र, मासिक पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली.